रैवनद दामोदर की व्यथा

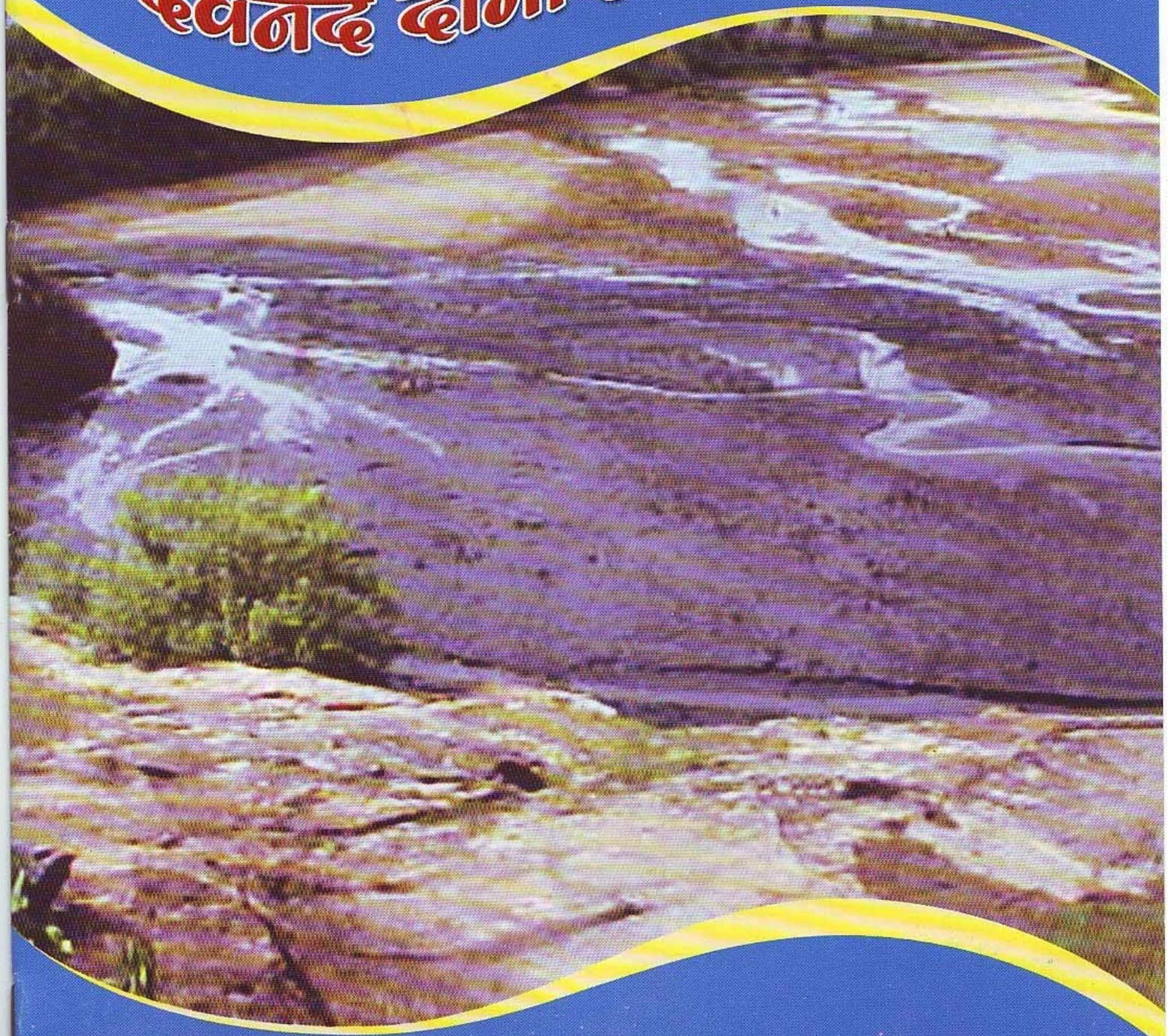

सरयू राय

अध्यक्ष, दामोदर बचाओ आंदोलन

सदस्य, झारखण्ड विधान सभा

पिपरवार वाशरी से दामोदर के प्रदूषण का दृश्य

पाथरडीह वाशरी का स्लरी प्रवाह दामोदर की ओर

नदी सतह पर पतरातू थर्मल से निकले तेल का जमाव

दामोदर तल पर स्लरी से प्रदूषण का एक दृश्य

दामोदर तल पर बैठी छाई की मोटी परत

केदला वाशरी ने चुटुवा नदी को बनाया स्लरी पौंड

बेरमो में रिजेक्ट कोल से नद का अतिक्रमण

बोकारो थर्मल के ऐशपौंड से दामोदर का प्रदूषण

देवनद दामोदर की व्यथा

मेरा नाम दामोदर है। मैं एक नद हूँ। हजारों साल पहले से मेरा सफर जारी है। इतने सालों में बहुत कुछ बदला। मुझे भी बदल दिया गया। आज मैं अपनी जीवन कथा बताता हूँ।

मेरा जन्म चूल्हा-पानी नामक जगह पर हुआ। यह लातेहार और लोहरदगा जिलों की सीमा रेखा पर बोदा पहाड़ के उपर है। यहाँ से मेरी यात्रा शुरू होती है।

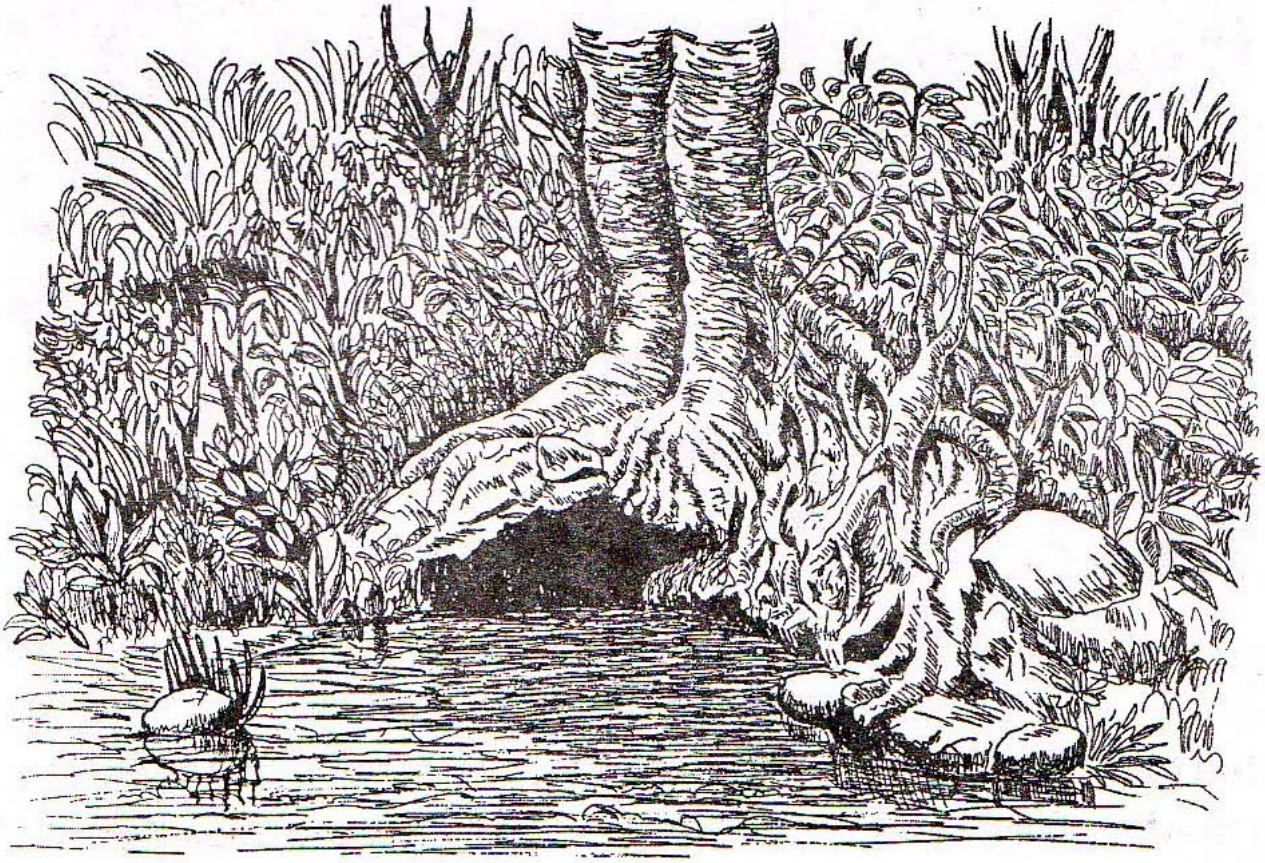

अपने जन्म स्थान से मैं आगे बढ़ता हूँ। करीब 35 किलोमीटर दूर पर केकराही गाँव है। यहाँ तक लोग मुझे देवनद कहते हैं। मेरी पूजा करते हैं। मुझे साफ रखते हैं। आदमी और जानवर दोनों मेरा पानी पीते हैं। यहाँ पर मैं बहुत खुश रहता हूँ। चलते-चलते लातेहार का बसेरिया गाँव पहुँचता हूँ। मेरा नाम दामोदर यहीं पर पड़ा।

यहाँ से मेरा रूप बड़ा होने लगा । दूसरी कई नदियाँ आकर मुझसे मिलने लगीं । पहले सीताही, फिर सुवरबोधवा जैसी नदियाँ । सब की सब मेरी ही तरह साफ-सुथरी। निर्मल, कलकल, छल छल बहता मैं थोड़ी दूर पर खेलारी पहुँचता हूँ, डकरा-पिपरवार कोयला खदान का इलाका में । यहाँ पर कोयले की धुलाई से मैं बदरंग होने लगा । कोयला की स्लरी के साथ हानिकारक रसायन और भारी धातुयें मुझमें घुलने लगीं। अब लोग मुझमें हाथ धोने से भी कतराते हैं ।

भुरकुन्डा सौन्दा-डी से मेरी पीड़ा बढ़ने लगती है । यहाँ मुझसे नलकारी नदी मिलती है। इसके किनारे पर पतरातू ताप बिजली घर बना है । इसके बनते समय मैं खुश था। इसमें मानव की भलाई थी । लेकिन इसने मुझे क्रूर और अमानवीय तरीके से प्रदूषित किया । बिजलीघर की हानिकारक छाई मेरे पानी में घुलने लगी । मेरी सतह पर तेल तैरने लगा। मेरे सहचर जलीय जीवों को सांस लेने में दिक्कत होने लगी ।

क्या बताऊँ ? शहरों की गन्दगी ढोने वाले नाले-नालियां भी मुझमें ही गिरती हैं । दूसरी नदियाँ भी बाहर से लिया कचरा मुझमें डालती हैं । वे भी क्या करे ? उनका हाल भी मुझसे अलग नहीं है ।

रामगढ़ के आगे रजरप्पा में मेरा मिलन भैरवी नदी से हुआ। नद और नदी के इस संगम को देखने हजारों पर्यटक आते हैं। यहाँ माँ छिनमस्तिका का मंदिर है। संगम को हमेशा पवित्र माना जाता है। लेकिन इस पवित्र स्थल पर मैं बहुत बदरंग हूँ। रजरप्पा कोल वाशरी की गंदगी से दम घुटता है। माँ का आशीर्वाद लेकर मैं आगे बढ़ता हूँ।

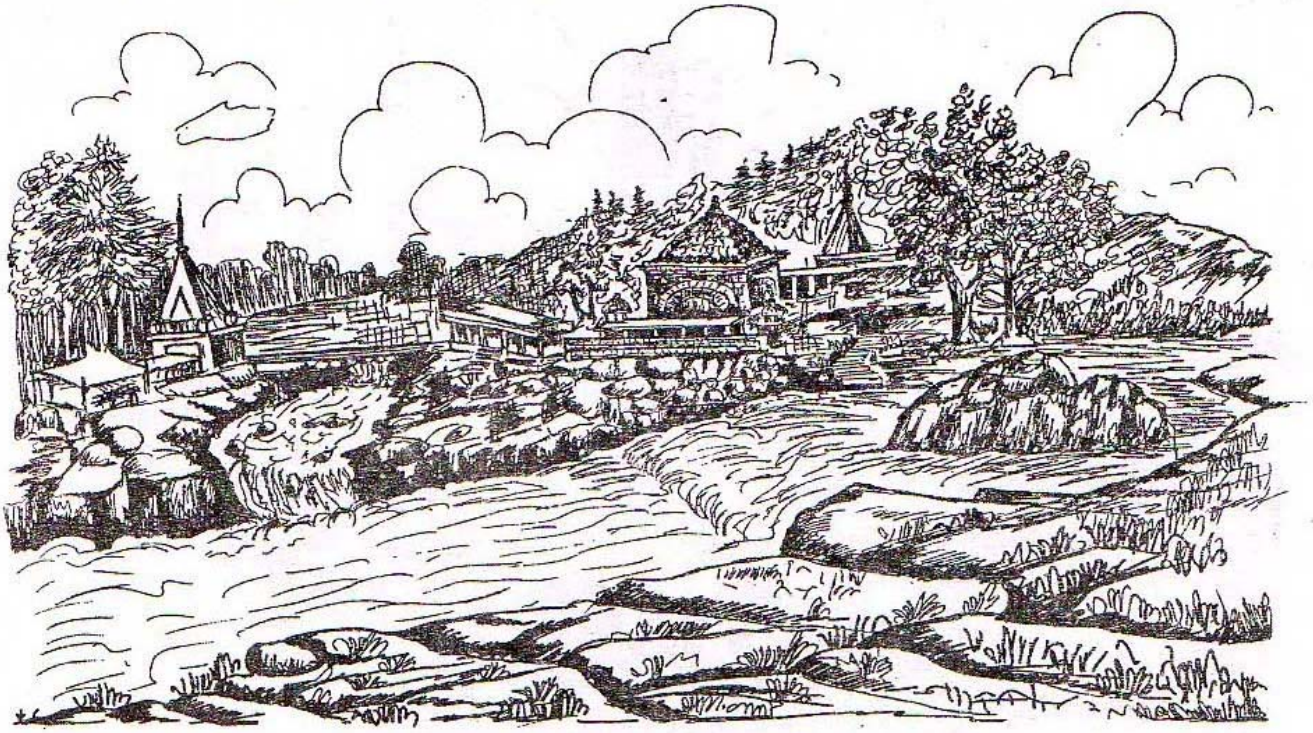

मुझे याद है, शुरू में मेरे किनारों पर बेहिसाब पेड़-पौधे थे। बड़ी-बड़ी मछलियां, घड़ियाल, केकड़ों और अन्य दोस्ताना जीवों की भरमार थी। ढेर सारे जलीय जीव-जन्तुओं का जीवन मुझसे ही था। पर अब वे भी नहीं रहे। मेरे किनारों पर कारखानों और वाशरियों की बाढ़ आ गयी। इनकी गंदगी को ढोते-ढोते मैं थक-सा जाता हूँ। मेरी चाल धीमी होने लगती है।

तेनुघाट में मुझे बांध दिया गया है। यहाँ पर तेनुघाट ताप बिजली घर है। यहाँ से नहर बनाकर मेरा पानी बोकारो स्टील प्लांट में ले जाया जाता है। आगे खेतको के पास कोनार नदी मुझसे मिलती है। घाटो और केदला वाशरी की गंदगी साथ लाती है। केदला वाशरी ने तो चुटुआ नदी को ही बाँध कर स्लरी-पौंड बना दिया है। इससे रिस कर आने वाला पानी गाँव के लोग पीते हैं।

मिलन बिन्दु के ठीक उपर डी.भी.सी. का बोकारो ताप बिजली घर है। इसका राख सहित गन्दा पानी कोनार होकर मुझमें गिरता है। इसमें भारी धातु मिले रहते हैं। कथारा वाशरी ने स्लरी और रिजेक्ट कोल का पहाड़ मेरे उपर खड़ा कर दिया है। इसकी गन्दगी मुझमें गिरती है। जरीडीह के लोगों को यही गन्दा पानी पीने के लिये सप्लाई होता है।

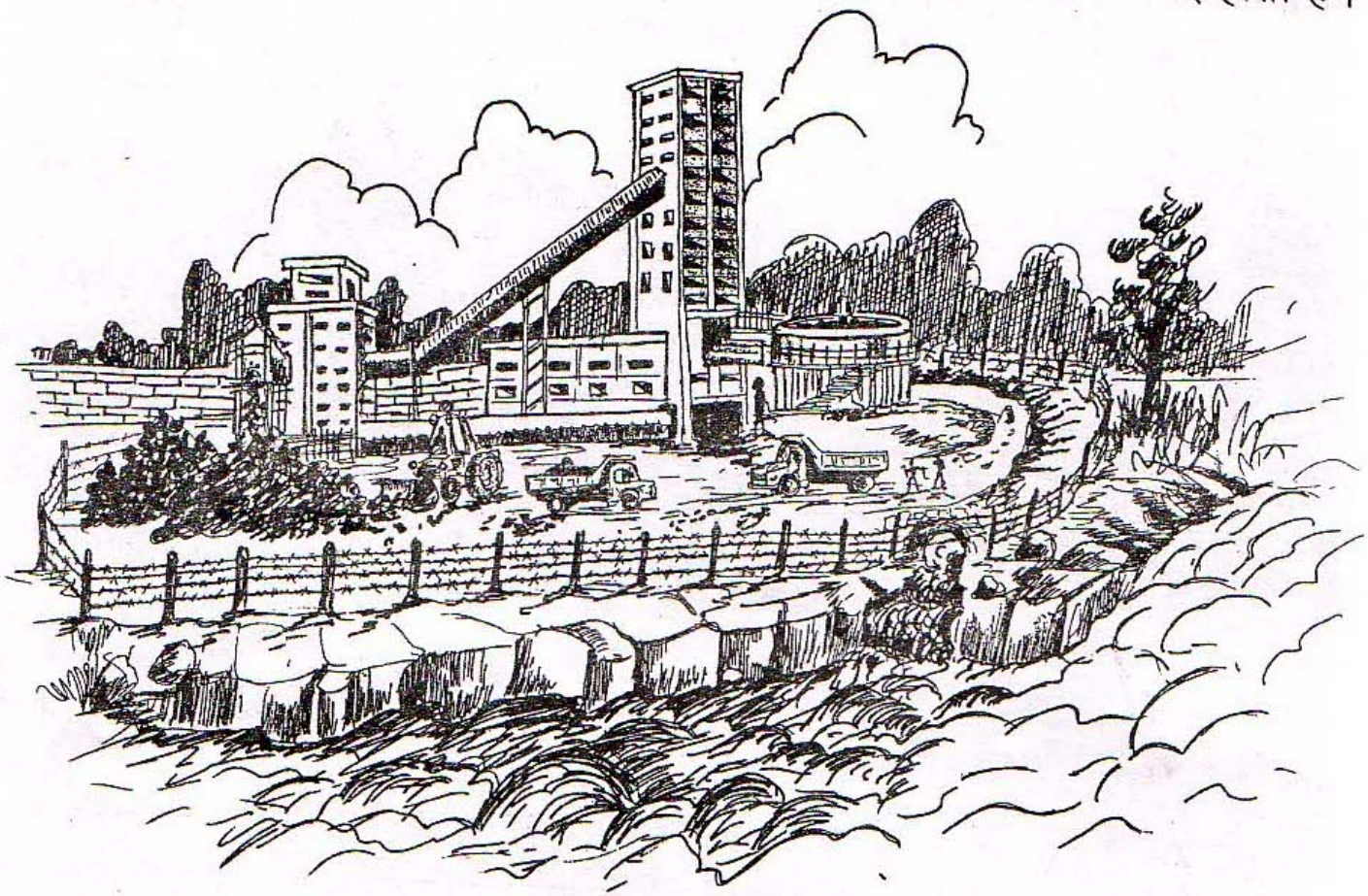

थोड़ा आगे चन्द्रपुरा ताप बिजली घर है, दुग्दा कोलवाशरी है। इन वाशरियों और बिजली घरों की छाई और जहरीला रसायन मिला राख बहकर मुझमें मिलते हैं। इसमें तेल मिला रहता है। मुझे एक घटना याद है। अप्रैल 1990 की बात है। बोकारो स्टील प्लांट का लाखों लीटर तेल मुझमें गिर पड़ा। पानी में यह दूर तक फैल गया। लाखों लोग मेरे इस दूषित जल को पीकर बीमार हो गये। न जाने कितने जानवरों की मौत हुई। मेरी आत्मा रो पड़ी। लेकिन किसी ने न सुनी। बोकारो स्टील प्लांट से निकला अम्लीय जल लेकर तेजाब नाला का मुझमें गिरना आज भी जारी है। आदमी ने अपने भौतिक सुख के लिए सब कुछ किया। यहाँ तक कि मेरे से मिलने वाले पानी को भी प्रदूषित कर दिया।

झरिया कोलफील्ड के भौंरा से मैं अपनी चाल तेज करता हूँ। इसके पहले मेरा सामना मुनीडीह और मधुबन कोलवाशरियों की गंदगी से होता है । थोड़ी दूर पर सुदामडीह, पाथरडीह, जामाडोबा, चासनाला कोलवाशरियां हैं । इनसे मुझे डर लगता है । इनके छाई की एक मीटर मोटी परत मेरे उपर बैठ गयी है । कुछ समय पहले तक सिन्दरी में खाद तथा सिमेन्ट के कारखानों से निकला रसायन एवं तेल मुझमें गिरता था, पर ये कारखाने अब बन्द हैं ।

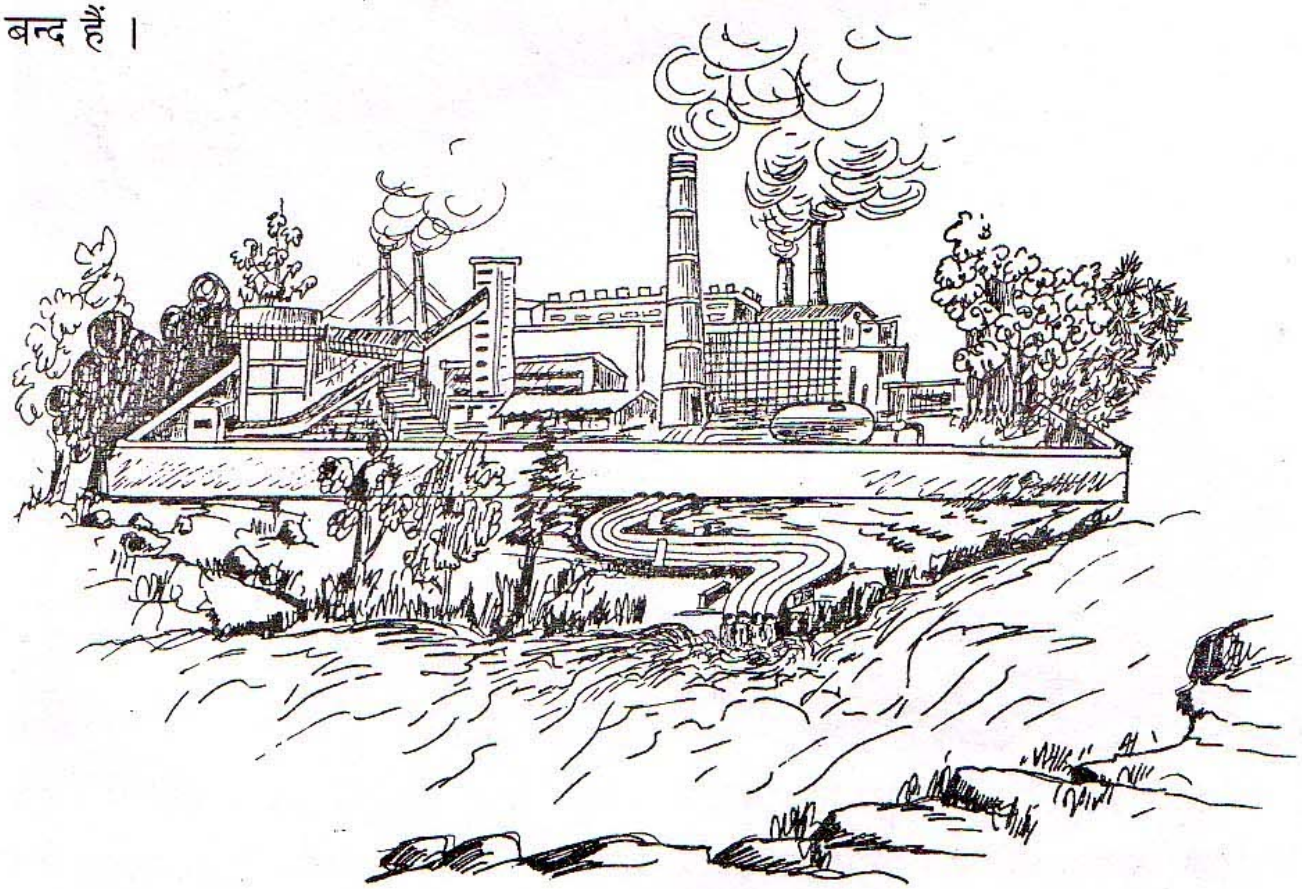

पंचेत में मुझे रोका गया । मुझे बांधकर बड़ा जलाशय बनाया गया । कुछ देर का आराम मिला । सहसा मुझे अपने आप पर विश्वास नहीं होता । चूल्हा पानी में मैं कितना छोटा था । यहाँ पर विशाल हो गया हूँ ।

झारखण्ड में करीब 300 किलोमीटर यात्रा करने के बाद यहाँ से मैं बंगाल में प्रवेश करता हूँ । यहाँ बराकर नदी आकर मिलती है । मेरे जल में बराकर का 40 फीसदी योगदान है । इस पर तिलैया और मैथन जलाशय बनाये गये हैं । भारत के प्रथम प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू ने इन्हें भारत के आधुनिक मंदिर की संज्ञा दी थी ।

पहले मुझे बंगाल का शोक कहा जाता था । अब मैं बंगाल के लिये वरदान बन गया हूँ। पर झारखंड अभिशप्त है । झारखंड में मुझपर डैम बन गये हैं । विस्थापन और डूब क्षेत्र की मार के बाद अब झारखंड को भीषण प्रदूषण का दंश झेलना पड़ रहा है ।

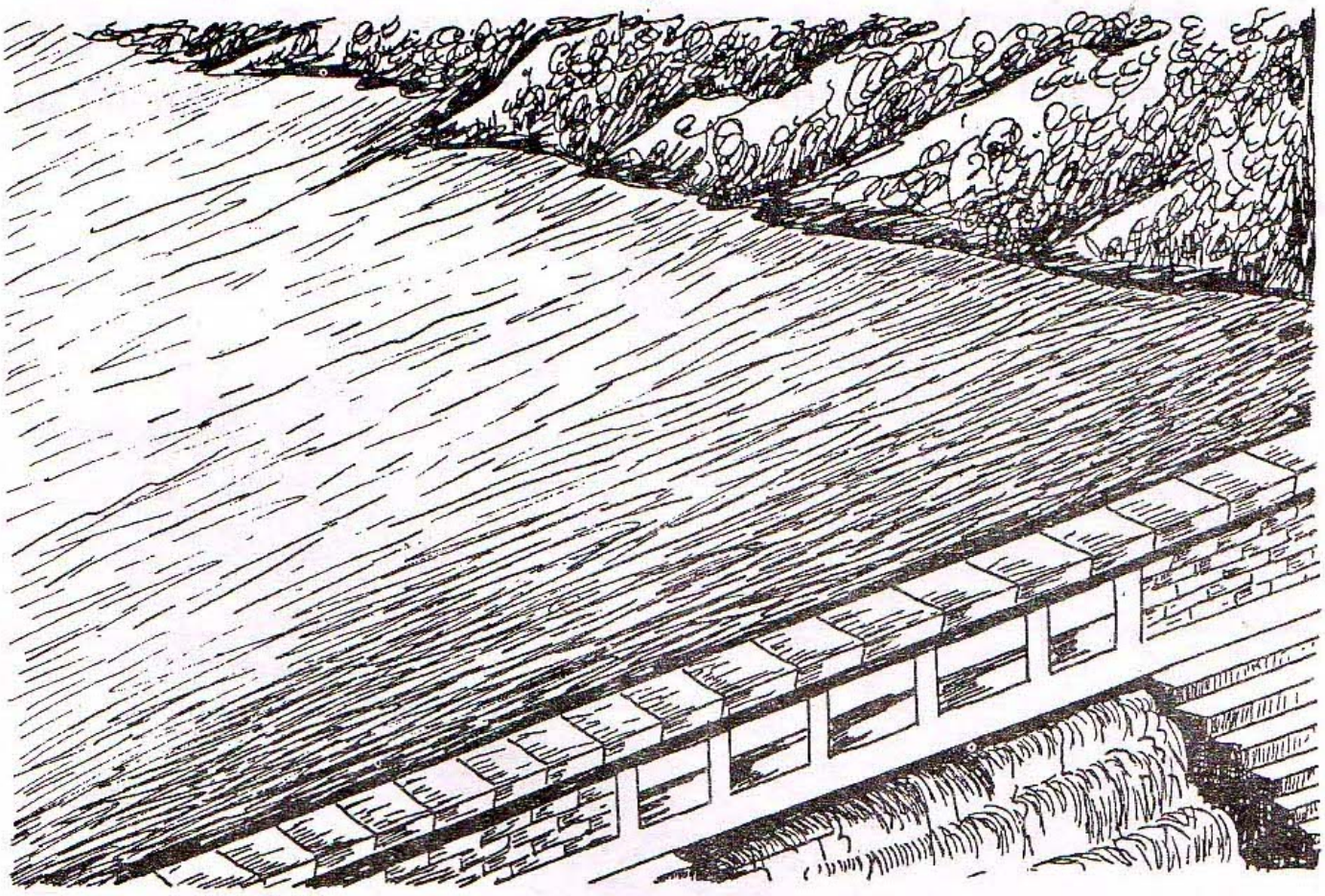

आगे आसनसोल, बर्नपुर, रानीगंज के कारखानों से निकला कचरा और मैं । यह सिलसिला रूकता नहीं है । बंगाल के दुर्गापुर में स्टील प्लांट और थर्मल पावर स्टेशन हैं । ये बिल्कुल मेरे किनारे पर है । मेजिया में भी एक थर्मल पावर स्टेशन है । इनकी छाई और रसायन युक्त कचरा मुझमें प्रवाहित होता है । पहले ऐसा नहीं था । लेकिन मानव के आगे मेरी क्या बिसात ?

जानलेवा प्रदूषण का सामना करते हुये धीमी गति से मैं कोलकाता से आगे बढ़ता हूँ । सगर पुत्रों का उद्धार करने हिमालय से चली पतित पावनी गंगा मुझसे मिलती है । पश्चिम बंगाल की सीमा में करीब 263 किलोमीटर की मेरी यात्रा यहाँ समाप्त होती है । इसके आगे गंगा सागर तक के सफर में मैं गंगा के साथ हो लेता हूँ ।

खेलारी से दुर्गापुर तक कोयला खदान, कोलवाशरियाँ, ताप और पन-बिजली उत्पादन केन्द्र, स्टील प्लांट, कोक ओवन, उर्वरक कारखाना, सीमेन्ट कारखाना, रासायनिक उद्योग, डिस्टिलरी एवं अन्य अनेक औद्योगिक गतिविधियां मेरे किनारे चल रही हैं । पूरे सफर में मैं मर-मर कर जीता रहा हूँ। डर लगता है कि विकास की होड़ में कहीं मेरा वजूद न मिट जाय। आज मैं देश का सबसे प्रदूषित जलस्रोत बन गया हूँ।

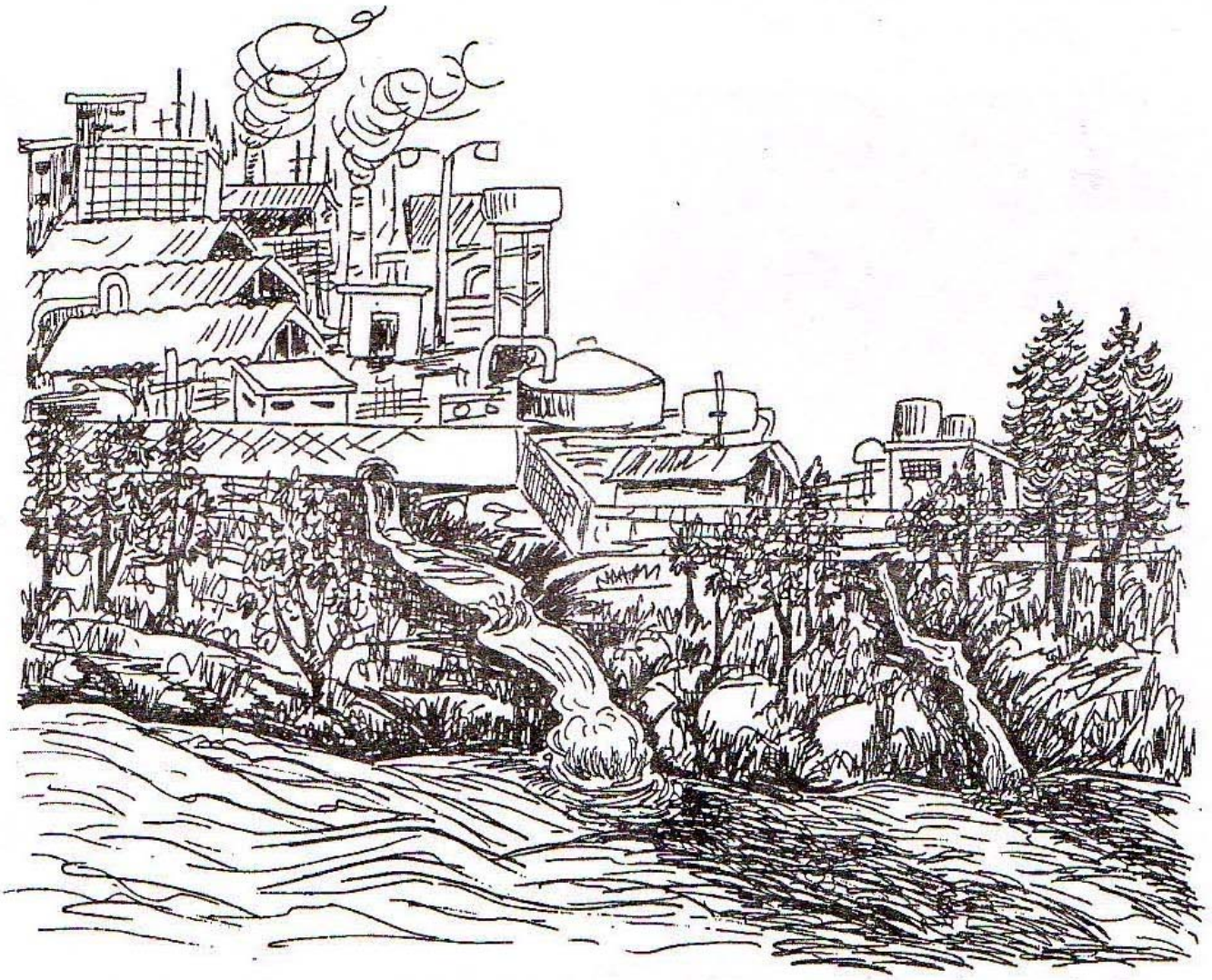

फिर भी मुझे गर्व है। दुनिया में मेरे जैसा कोई नहीं है। आज मेरे किनारों पर इतना बड़ा आर्थिक साम्राज्य खड़ा है। मेरा जल और मेरे उदर में बैठे खनिज इनके अस्तित्व का आधार हैं। पर यही आर्थिक साम्राज्य आज मेरे लिये भस्मासुर बन गया है, मुझे लील लेने पर उतारु है।

मैं झारखण्ड के विकास की जीवन रेखा हूँ। अपने अस्तित्व के लिये संघर्षरत हूँ। लोग मेरी पीड़ा के साथ जुड़ने लगे हैं। दामोदर बचाओ आंदोलन आरम्भ हुआ है। मेरा प्रदूषण दूर करने के लिये 'युगांतर भारती' की अगुआई में स्वयंसेवी समूहों का साझा मंच बना है। मुझे उम्मीद बंधी है। कारखानों के प्रबंधकों की और कानून के रखवालों की नीन्द टूटेगी। इनकी आत्मा जागेगी। मेरा अस्तित्व बचाने के लिये चल रहा अभियान सफल होगा।

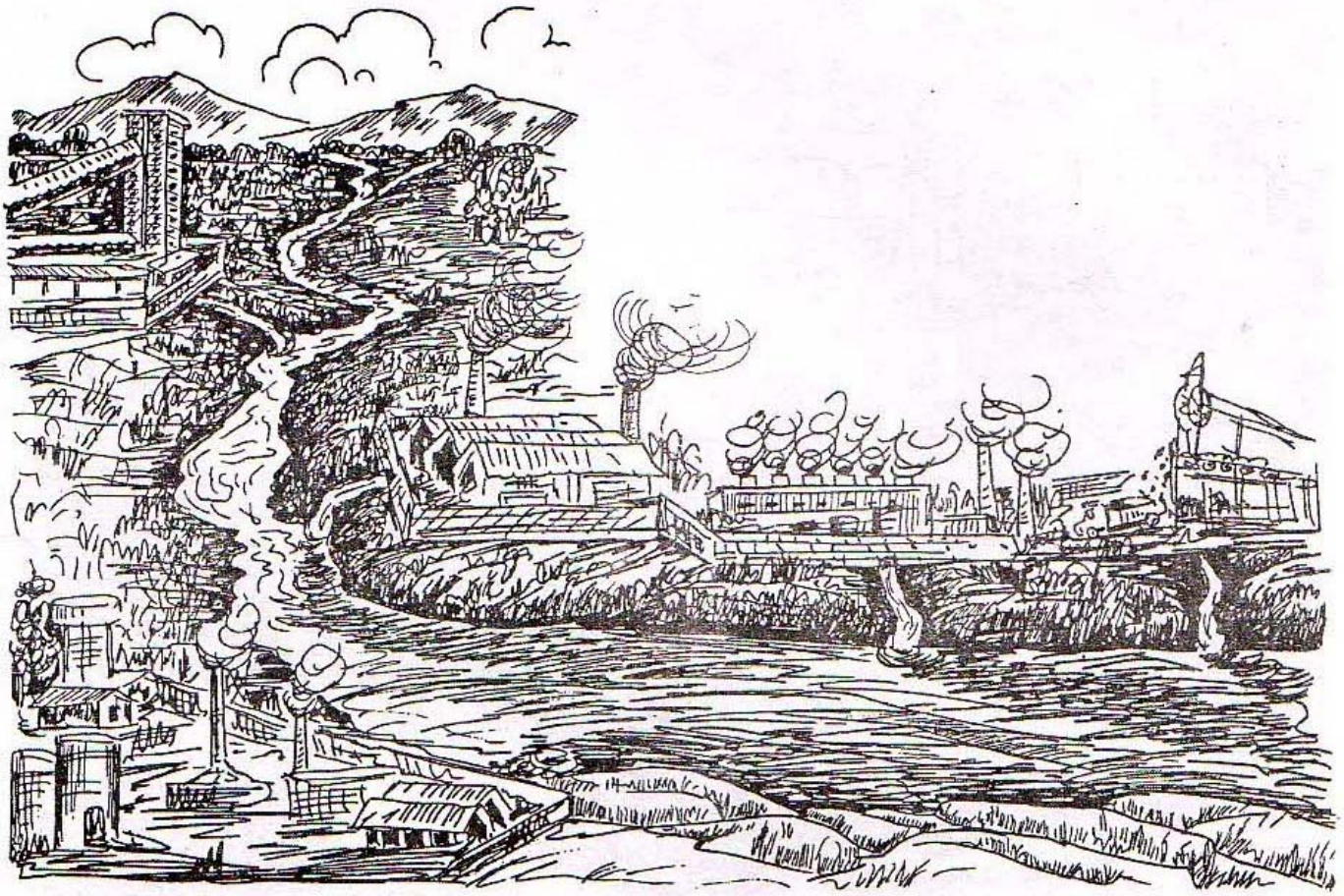

मेरी एक ही इच्छा है। फिर से मुझे मनुष्य तथा पशुओं के लायक बनने दो। जलीय जीवों के लायक बनने दो। पेड़-पौधों तथा फसलों के लायक बनने दो।

मैं अपनी सफाई खुद कर सकता हूँ, यदि मुझे गंदा करना छोड़ दें।

अन्त में मैं यही कहना चाहता हूँ। यह हमेशा याद रखना होगा। हर चीज का विकल्प हो सकता है, पर पानी का नहीं।

मैं नद हूँ, नद बने रहने दो।

पतरातू थर्मल से प्रदूषण का दृश्य

वायु प्रदूषण और दामोदर के अतिक्रमण का दृश्य

पतरातू थर्मल की छाई ऐशपौंड के बदले नदी में

सुदामडीह वाशरी का स्लरी प्रवाह दामोदर की ओर

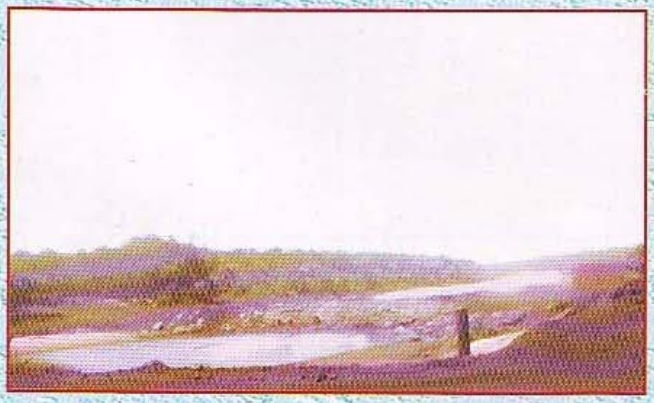

अशोका प्रोजेक्ट के पास अवरूद्ध दामोदर

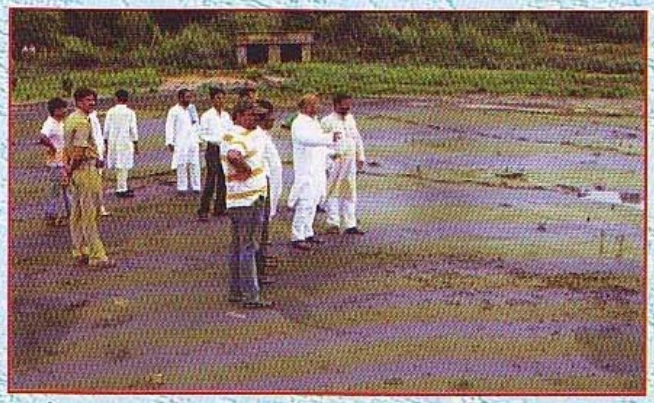

दामोदर प्रदूषण का अवलोकन करती दा.ब.आ. की टीम

वैज्ञानिक नेशमन हस्को द्वारा प्रदूषित जल नमूना संग्रह

दा.ब.आ. कार्यकर्ता द्वारा दामोदर जल प्रदूषण का प्रदर्शन

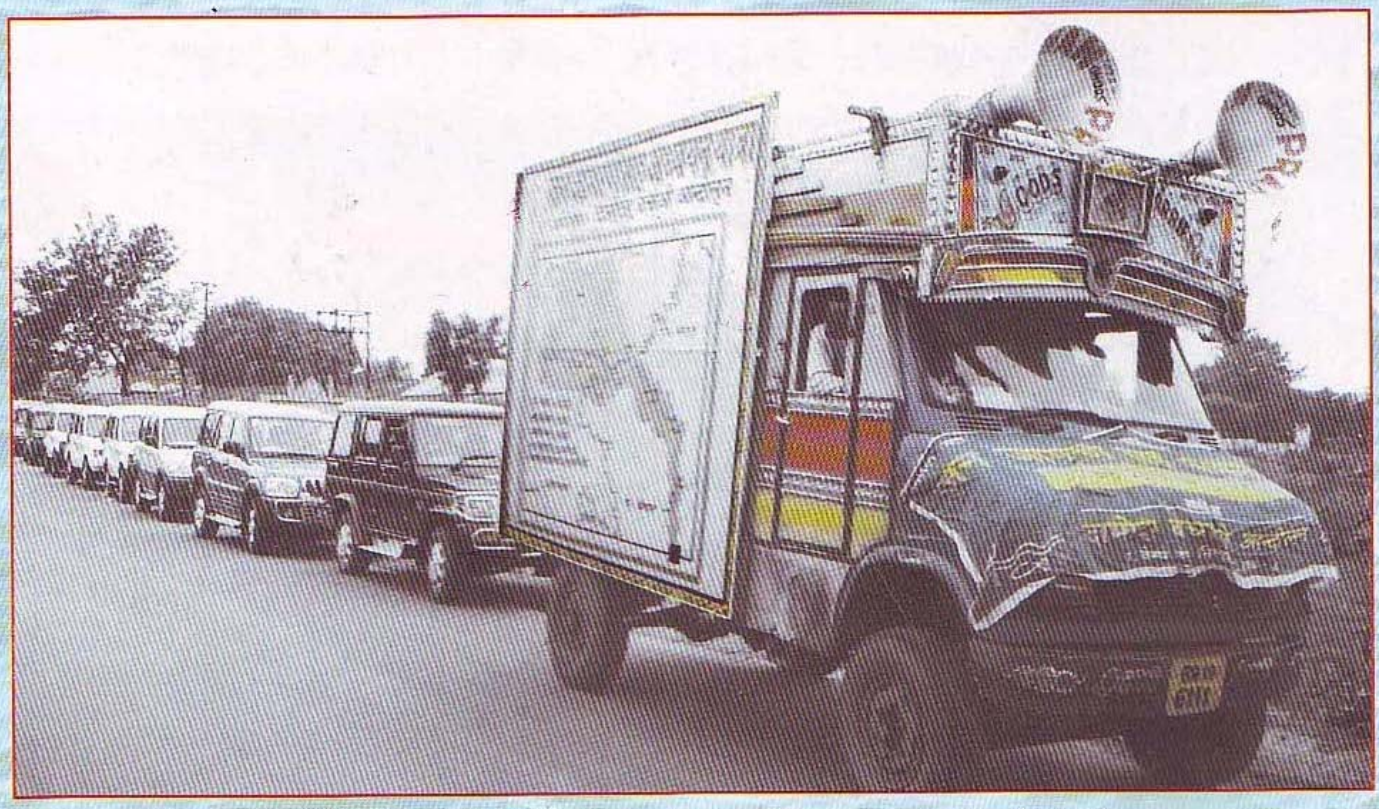

दामोदर प्रदूषण अध्ययन सह जन जागरण यात्रा का एक दृश्य (2004)

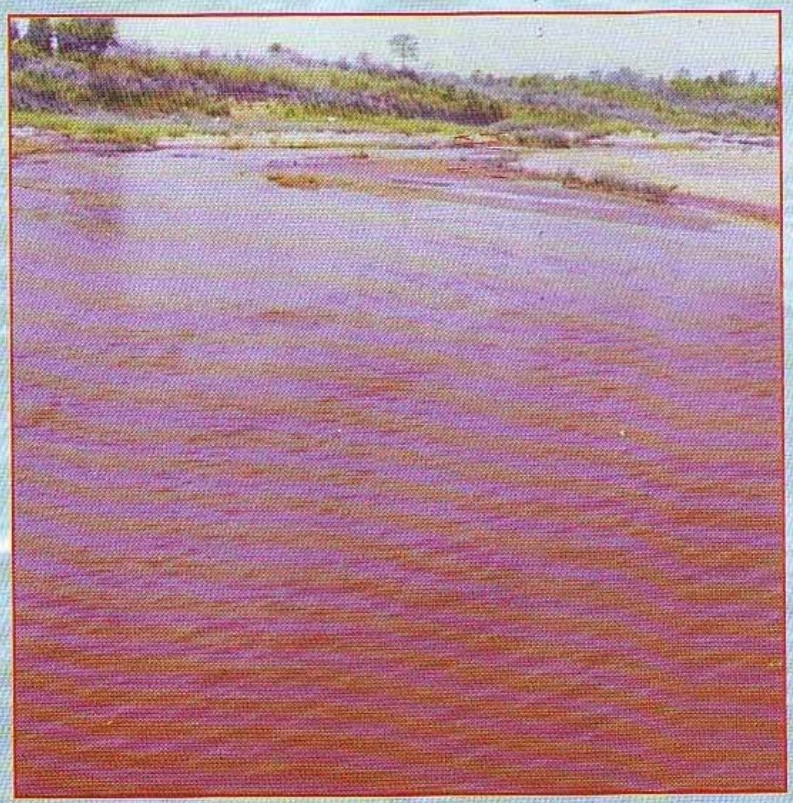

दामोदर में गिरता बोकारो स्टील लिमिटेड का तेजाब नाला

पिपरवार वाशरी की स्लरी दामोदर की ओर

प्रकाशक : युगान्तर भारती, सिदरौल, पो. - नामकुम, जिला - राँची (झारखण्ड)
रेखा चित्रांकन : राज्य संसाधन केन्द्र, आद्री, राँची (झारखण्ड) से साभार